पाठ 18. अंतरिक्ष विजय

पाठ का परिचय

इस पाठ में लेखक ने अंतरिक्ष पर विजय पाने वाले तीन महान भारतीयों का संक्षिप्त परिचय दिया है। सबसे पहले लेखक ने मानव की अंतरिक्ष यात्रा किस प्रकार 1957 में रूस के प्रथम कृत्रिम उपग्रह 'स्पूतनिक' को अंतरिक्ष में भेजने से शुरू हुई यह बताया है। अंतरिक्ष में कदम रखने वाले प्रथम भारतीय श्री राकेश शर्मा थे। उनका जन्म 13 जनवरी 1949 को पटियाला में हुआ था। 1966 में उन्होंने हैदराबाद में स्नातक किया। 3 अप्रैल 1984 को उन्होंने पहली बार अंतरिक्ष में कदम रखा। उन्होंने वहाँ से तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से बात भी की। उन्होंने वहाँ से पृथ्वी, सूर्य, चंद्रमा और कुछ अन्य ग्रहों के दुर्लभ चित्र खींचे। सोवियत संघ ने उन्हें अपने सर्वोच्च सम्मान 'ऑर्डर ऑफ लेनिन' से सम्मानित किया तथा भारत सरकार ने उन्हें 'अशोक चक्र' से सम्मानित किया।

इसके बाद लेखक ने भारत की प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला का संक्षिप्त परिचय दिया। कल्पना चावला का जन्म 1 जुलाई 1961 को हरियाणा के करनाल में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा 'टैगोर बाल निकेतन' में हुई। इन्होंने 'पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज' से वैमानिकी अभियांत्रिकी में स्नातक तथा 'टेक्सास विश्वविद्यालय' से स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। नासा में कई प्रकार के शोध कार्य किए। 1994 में उन्हें अंतरिक्ष प्रशिक्षण के लिए चुना गया। 2003 में कल्पना दोबारा अंतरिक्ष में गईं। वहाँ उन्होंने अपने साथियों के साथ कई महत्वपूर्ण शोध किए परंतु वापस लौटते समय पृथ्वी पर उतरने से कुछ पल पहले ही उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ तथा उनके साथ उसमें बैठे सभी अंतरिक्ष यात्री काल-कवलित हो गए। भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व उनके अनमोल योगदान को कभी नहीं भूल पाएगा।

कल्पना चावला के बाद लेखक ने अंतरिक्ष की उड़नपरी सुनीता विलियम्स का संक्षिप्त परिचय दिया। सुनीता का जन्म 19 सितंबर 1965 को अमेरिका के ओहियों में यूक्लिड नामक स्थान पर हुआ। सुनीता के पिता दीपक पांड्या भारत के गुजरात प्रांत से हैं। ये एक डॉक्टर हैं तथा 1958 में अमेरिका में बस गए। सुनीता की पूरी शिक्षा-दीक्षा वहीं हुई। नील आर्मस्ट्रांग से प्रेरणा पाकर सुनीता ने अंतरिक्ष को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। 2006 में छह माह तक अंतरिक्ष में रहकर शोध करते हुए इन्होंने सबसे अधिक समय तक अंतरिक्ष में रहने वाली महिला का रिकॉर्ड बनाया। 22 घंटे 27 मिनट तक वहाँ चहलकदमी करके सबसे लंबे समय तक स्पेसवॉक करने का रिकॉर्ड बनाया। इसके साथ ही और न जाने कितने रिकॉर्ड बनाकर इन्होंने न केवल अपने पिता दीपक का, उनके देश भारत का बल्कि पूरे विश्व का गौरव बढ़ाया है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

सपने देखना बहुत महत्वपूर्ण है। सपने मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर ले जाते हैं। राकेश शर्मा, कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स ने जो स्वप्न देखे उन्हें साकार किया। जीवन को ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए सतत् प्रयत्न आवश्यक है।

पाठ का वाचन

पाठ की शुरुआत देश के कुछ विशिष्ट व्यक्तित्वों के जीवन पर चर्चा से शुरू करें, जिन्होंने

अपना पूरा जीवन विज्ञान को समर्पित कर दिया और देश ही नहीं संपूर्ण विश्व के लिए आदर्श बन गए। बच्चों को ऐसे ही व्यक्तित्वों की कथा सुनाकर पाठ का आरंभ करें। बच्चों से पाठ का मौन वाचन करने को कहें। बच्चों के द्वारा पाठ समाप्त करने पर उन्हें अपने विचार कक्षा में सुनाने को कहें। पाठ को स्वयं भी एक बार पढ़ें। कठिन शब्दों के अर्थ तथा आवश्यक पंक्तियों की व्याख्या करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर उसपर चर्चा करें –

- क्या तुमने कभी कोई सपना देखा है?
- तुम्हारा जीवन लक्ष्य क्या है?
- उसे पाने के लिए तुम क्या-क्या प्रयत्न कर रहे हो?
- राकेश शर्मा, कल्पना चावला तथा सुनीता विलियम्स के बारे में तुमने क्या पढ़ा है?